

सबसे महत्वपूर्ण बातें: बाइबल आधारित समानता की बहस में वास्तव में क्या मायने रखता है

एंड्रयू बार्टलेट (Andrew Bartlett) द्वारा (जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf www.frauen-vergebt-uns.de)

विद्वानों की बहस बहुत विस्तृत है और काफ़ी उलझाने वाली हो सकती है, फिर भी कुछ महत्वपूर्ण, केंद्रीय बातें हैं। मुख्य खंडों में पूरकतावादी व्याख्याएँ पवित्र शास्त्र से हट जाती हैं या पवित्र शास्त्र में ऐसी बात जोड़ देती हैं जो वहाँ वास्तव में लिखी ही नहीं है।

भूमिका

पूरकतावादियों और समानतावादियों के बीच की बहस इस विषय पर परस्पर विरोधी मतों की एक **घनी झाड़ी** और एक **दलदल** है कि पवित्र शास्त्र क्या सिखाता है। ("पूरकतावादी" यह मानते हैं कि पुरुष और स्त्रियाँ परमेश्वर के सामने तो समान हैं, परंतु परमेश्वर की इच्छा यह है कि पुरुष स्त्रियों की अगुवाई करें, विशेषकर विवाह में और कलीसिया में। "समानतावादी" यह मानते हैं कि पुरुष और स्त्रियाँ दोनों अगुवाई के कार्य संभाल सकते हैं।)

इसमें बाइबल के शब्दों और खंडों के अर्थ के बारे में परस्पर विरोधी मत भी शामिल हैं, और बाइबल जो कहती है उसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में भी परस्पर विरोधी मत।

पूरकतावादियों का मानक ग्रंथ, *Recovering Biblical Manhood and Womanhood*, जिसका संपादन जॉन पाइपर (John Piper) और वेन गूडेम (Wayne Grudem) ने किया है, 684 पृष्ठों का है (2021 का मुद्रित संस्करण)। गूडेम का विशाल ग्रंथ *"Evangelical Feminism and Biblical Truth"* 856 पृष्ठों का है। *"Women in Ministry"* विषय पर माइक विंगर (Mike Winger) की हाल की वीडियो-श्रृंखला 43 घंटे लंबी है।

बहस के समानतावादी या पारस्परिकतावादी पक्ष में फिल पेन (Phil Payne) की पुस्तक *"Man and Woman, One in Christ"*, जो केवल पौलुस की पत्रियों पर केंद्रित है, 500 से अधिक पृष्ठों की है। *"Discovering Biblical Equality"* का तीसरा संस्करण, जिसका संपादन रॉन पियर्स (Ron Pierce), सिंथिया वेस्टफॉल (Cynthia Westfall) और क्रिस्टा मैककिरलैंड (Christa McKirland) ने किया है, 698 पृष्ठों का है।

इसके अलावा बहस के दोनों पक्षों में बहुत-सी अन्य पुस्तकें भी हैं – अधिकतर 200 से 400 पृष्ठों की।

मेरी नई पुस्तक, *"True Complementarity: The way of Christ for men and women"* (अक्टूबर 2026 में प्रकाशित हो रही है), इन सभी अलग-अलग तर्कों का विवेचन करती है और इसलिए लगभग उतनी ही विस्तृत है जितना गूडेम का विशाल ग्रंथ।

यदि आपके पास इस सारी सामग्री का अध्ययन करने और उसे छॉटने का समय और बुलाहट है, तो यह अच्छा है। पर यदि नहीं, तो फिर क्या? उस विश्वासी का क्या, जिसके जीवन में पहले से ही उतना बोझ है जितना वह सँभाल सकता है? उस पास्टर का क्या, जो पहले से ही बहुत व्यस्त है और लगातार इसी में लगा रहता है कि किसी तरह सब कुछ सँभाल सके?

इस लेख में मेरा लक्ष्य पूरी बहस में से **महत्वपूर्ण** बातों और **सबसे महत्वपूर्ण** बातों को निकालकर सामने रखना है।

महत्वपूर्ण बातें वे हैं जो सबसे स्पष्ट रूप से एक पारस्परिकतावादी स्थिति की ओर ले जाती हैं – यानी परस्पर और समान दर्जे वाली स्थिति की ओर। फिर मैं इन महत्वपूर्ण बातों में से दो सबसे महत्वपूर्ण बातें चुनूँगा। ये दो केंद्रीय बातें हैं, जिनके बारे में मेरा विश्वास है कि वे अपने-आप में ही पूरकतावादी स्थिति की ज़मीन खिसका देती हैं। यदि किसी के पास यह समझाने के लिए एक मिनट हो कि पारस्परिकतावादी पूरकतावादी स्थिति को क्यों अस्वीकार करते हैं, तो उसे इन्हीं दो बातों का उल्लेख करना चाहिए।

मेरी आशा है कि यह लेख पूरकतावादी भाइयों और बहनों को एक बेहतर स्थान तक पहुँचने में सहायता करे, एक ऐसे स्थान तक जहाँ ऊपर का आकाश और कोमल नीला हो और नीचे की धरती और मनोहर हरी।

सबसे पहले मैं पारस्परिकतावादी स्थिति का एक सकारात्मक विवरण प्रस्तुत करूँगा।

इसके बाद मैं दस मुख्य बातें समझाऊँगा, जिनमें पूरकतावादी स्थिति पवित्र शास्त्र के कथन से हट जाती है। हम उन्हें मोटे तौर पर बाइबल की पुस्तकों के क्रम में देखेंगे – पर पूरी तरह ठीक उसी क्रम में नहीं, क्योंकि विवाह और सेवकाई के बीच भेद करना उचित है। यही हमारी सामग्री का बड़ा भाग होगा।

अंत में हम दो सबसे महत्वपूर्ण बातों को चुनेंगे। एक का संबंध 1 तीमुथियुस 2:12 में पौलुस के शब्द-चयन से है। दूसरी का संबंध इस बात से है कि परमेश्वर ने पुरुषों को वह करने का कोई निर्देश नहीं दिया जो पूरकतावादी पुरुषों के लिए निर्धारित करते हैं। लेख के अंत तक आप पहचान लेंगे कि ये ही दो सबसे महत्वपूर्ण बातें क्यों हैं।

एक पारस्परिकतावादी दृष्टिकोण

पुरुषों और स्त्रियों के बारे में एक पारस्परिकतावादी दृष्टिकोण एक साझा आधार से आरंभ होता है, जिस पर पूरकतावादी विद्वान भी सहमत हैं। यह साझा आधार है स्त्रियों के बारे में पारंपरिक बहुमत-मत को अस्वीकार करना।

ऐतिहासिक रूप से स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन रखी गई थीं। इस अधीनता का मुख्य कारण स्त्रियों की हीनता बताया जाता था – स्त्रियों को स्वभाव से हीन माना जाता था, इसलिए दर्जे में भी उन्हें अधीन होना चाहिए था। अपनी स्वाभाविक हीनता के कारण उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के अधीन रहना था – समाज और सार्वजनिक जीवन में, परिवार में और कलीसिया में।

स्त्रियों की बुद्धि और नैतिक क्षमताओं को नीचा आँकना कोई अनोखा, हाशिये का मत नहीं था। यह प्रचलित दृष्टिकोण था। हम मसीही इतिहास के बड़े-बड़े नाम उद्धृत कर सकते हैं, जैसे अलेक्जान्द्रिया के क्लेमेंट (Clemens von Alexandria), ऑगस्टीन (Augustinus), थॉमस एक्विनास (Thomas von Aquin), लूथर (Luther), कैल्विन (Calvin), यहाँ तक कि वेस्ली (Wesley) भी।

उदाहरण के लिए एक उद्धरण, जो अग्रणी प्यूरिटन धर्मवैज्ञानिक रिचर्ड बैक्सटर (Richard Baxter) ने 1665 में लिखा। वे पुरुषों को सलाह देते हैं कि विवाह से पहले वे यह सोच लें कि स्त्रियों के स्वभाव को देखते हुए उन्हें कितने धैर्य की आवश्यकता होगी:

“स्त्री-जाति की स्वाभाविक दुर्बलता तुमसे जो धैर्य माँगती है, वह कुछ कम नहीं है। कुछ थोड़ी-सी स्त्रियों को छोड़कर, जो धीरजवंत और पुरुषों जैसी हैं, स्त्रियाँ सामान्यतः तीव्र कल्पना वाली, कोमल, भावुक और अधीर होती हैं, सहज ही क्रोध, ईर्ष्या या असंतोष की ओर झुक जाती हैं; इसके अतिरिक्त उनकी बुद्धि दुर्बल होती है और इसलिए वे स्वयं को सुधारने में असमर्थ होती हैं। वे पुरुष और बालक के बीच की स्थिति में हैं: कुछ थोड़ी-

सी में पुरुष का अंश अधिक है, और बहुतों में बालक का अंश अधिक है; पर अधिकांश केवल बीच की अवस्था में हैं।" (बैक्सटर, A Christian Directory, भाग 2: Christian Economics, अध्याय 1।)

स्त्रियों के बारे में यह दृष्टिकोण कोई चरम मत नहीं है। बल्कि यह सामान्य नियम-सा है।

पारस्परिकतावादी और पूरकतावादी, दोनों प्रकार के विद्वान इस पारंपरिक दृष्टिकोण को उचित ही अस्वीकार करते हैं। यह परमेश्वर के वचन से नहीं, बल्कि मानवीय दर्शन और संस्कृति से निकला है।

कलीसिया के इतिहास में ऐसी प्रतिष्ठित आवाज़ें भी थीं जिन्होंने बहुमत-मत का विरोध किया। उदाहरण के लिए चौथी सदी में महान बेसिल (Basilius der Große) ने ज़ोर देकर कहा कि स्त्रियाँ स्वभाव से नैतिक और बौद्धिक रूप से पुरुषों के बराबर हैं (बेसिल, *Über den Ursprung der Menschheit* (मानवजाति की उत्पत्ति पर), प्रवचन 1)। फिर भी यह बहुमत-मत कि स्त्रियाँ स्वभाव से पुरुषों से हीन हैं, बड़ी हठ से बना रहा।

कई सदियों की बहस के बाद, विशेषकर 17वीं से 20वीं सदी तक, 1980 के दशक के अंत तक कलीसिया में बहुमत-मत अंततः बदल चुका था। वह इस बात को मानने की ओर मुड़ गया कि स्त्री का स्वभाव पुरुष के स्वभाव के सचमुच बराबर है – नैतिक और बौद्धिक रूप से –, जैसा कि पवित्र शास्त्र में प्रकट होता है।

प्रभु यीशु ने अपनी कलीसिया को शुद्ध करना छोड़ा नहीं है।

उत्पत्ति

स्त्रियों के बारे में सुधरे हुए दृष्टिकोण का आधार उत्पत्ति 1:26–28 है, जहाँ पुरुष और स्त्रियाँ दोनों परमेश्वर के स्वरूप में, परमेश्वर की सृष्टि पर सह-शासक के रूप में रचे गए।

अब, परमेश्वर के स्वरूप में पूर्ण मानवीय व्यक्ति के रूप में समान होने का अर्थ यह नहीं है कि पुरुष और स्त्रियाँ **एक जैसे** हैं। परमेश्वर ने हमें पुरुष और स्त्री के रूप में रचा। इसलिए पुरुष और स्त्रियाँ भिन्न हैं। वे सचमुच एक-दूसरे के पूरक हैं।

ठीक पुरुषों और स्त्रियों के बीच के इन भेदों के कारण ही मैं "समानतावादी" शब्द के स्थान पर "पारस्परिकतावादी" (mutualist) शब्द का प्रयोग करता हूँ। दुर्भाग्य से कुछ लोग "समानतावादी" शब्द को इस गलत दावे के रूप में समझ लेते हैं कि पुरुष और स्त्रियाँ एक जैसे हैं।

इस विषय में हमें बाइबल के दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

- परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्य होना प्राथमिक है; पुरुष और स्त्री होना महत्वपूर्ण है, पर गौण है।

याद कीजिए कि परमेश्वर ने पशुओं को भी नर और मादा के रूप में रचा। फिर भी पशु परमेश्वर के स्वरूप में नहीं रचे गए। परमेश्वर का स्वरूप हमारे लैंगिक भेद में नहीं, बल्कि हमारे मनुष्य होने में है।

उत्पत्ति 1:28 में पुरुषों और स्त्रियों को संयुक्त शासक कहे जाने के बाद – "प्रभुता" का विषय अगली बार कहाँ आता है? उत्पत्ति 3:16 में, जहाँ मनुष्य भटक गए थे और उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी थी। परमेश्वर स्त्री को चेतावनी देता है कि आज्ञा न मानने का परिणाम पुरुष की प्रभुता होगी ("वह तुझ पर प्रभुता करेगा")।

जीवन की वास्तविकताओं में यह भी शामिल है कि पुरुषों में स्त्रियों से अधिक मांसपेशीय बल होता है और पुरुष बच्चों को जन्म नहीं देते। इसलिए जब मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा न मानने और स्वयं को पहले स्थान पर रखने का निर्णय लेते हैं, तो सामान्यतः इसका परिणाम यह होता है कि पुरुष स्त्रियों पर प्रभुता करते हैं। यही उत्पत्ति 3 है।

परंतु उत्पत्ति 1 में परमेश्वर की मूल योजना पुरुष की प्रभुता (पुरुष स्त्रियों पर) नहीं, बल्कि साझी प्रभुता (पुरुष और स्त्रियाँ सृष्टि पर) थी।

सामान्य रूप से पुराना नियम

पुराना नियम गवाही देता है कि जहाँ परमेश्वर का आत्मा कार्य करता है, वहाँ स्त्रियाँ अगुवाई के कार्य संभालने के लिए बुलाई जाती हैं।

इस संबंध में हम मिरियम (निर्गमन 15; गिनती 12; 1 इतिहास 6:3; मीका 6:4), हुल्दा (2 राजाओं 22; 2 इतिहास 34) और विशेषकर दबोरा (न्यायियों 4-5) के बारे में सोच सकते हैं।

पुराने नियम में, राजाओं के समय से पहले, परमेश्वर द्वारा नियुक्त केवल तीन ऐसे अगुवे हैं जिनमें प्रजा के सर्वोच्च अगुवे, भविष्यद्वक्ता, सर्वोच्च न्यायी और प्रधान सेनापति के कार्य एक साथ मिले हुए थे: मूसा, शमूएल और दबोरा।

परमेश्वर इसके विरुद्ध नहीं है कि स्त्रियाँ अगुवाई के पद संभालें। क्योंकि स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह परमेश्वर के स्वरूप में रची गई हैं।

यीशु

पहली सदी की यहूदी संस्कृति में – अन्य स्थानों की तरह – स्त्रियों को नैतिक और बौद्धिक रूप से पुरुषों से हीन माना जाता था। परंतु यीशु ने स्त्रियों के साथ दूसरे दर्जे के मनुष्यों जैसा व्यवहार नहीं किया। उसने उन्हें पुरुषों के साथ-साथ पूर्ण चेलियों के रूप में स्वीकार किया।

सुसमाचारों में यीशु अपने चेलों को सिखाता है कि उन्हें कैसे जीना है। अपनी शिक्षा में वह पुरुषों की जीवन-शैली और स्त्रियों की जीवन-शैली के बीच कोई भेद नहीं करता।

फिर इसे कैसे समझाया जाए कि उसने बारह प्रेरितों को बुलाया – और वे सब पुरुष थे?

यह एक समय-सीमित कार्य-पद्धति थी। यह एक प्रतीक था, जो बारह कुलपतियों की याद दिलाता था। यीशु के समय में इस्राएल में सैकड़ों वर्षों से बारह गोत्र नहीं रह गए थे। बारह पुरुषों को अपने चारों ओर इकट्ठा करने का प्रतीकात्मक कार्य यह दिखाता था कि अब वह इस्राएल की प्रजा को अपने चारों ओर नए सिरे से गठित कर रहा है।

इस प्रतीक का अस्थायी कार्य प्रेरितों के काम 1 में पुष्ट होता है, जहाँ पतरस यहूदा के उत्तराधिकारी के विषय में निर्देश देता है। उत्तराधिकारी को ऐसा पुरुष होना था जो यीशु की पूरी सार्वजनिक सेवकाई के दौरान चेलों के समूह में रहा हो (प्रेरितों 1:21-22)। यह एक ही बार की बात है।

बारह के प्रतीक के बराबर वज़न वाला एक बाइबल-आधारित प्रतिरूप भी है। यह यीशु के पुनरुत्थान में दिखाई देता है। यह उसका सोच-समझकर स्त्रियों को चुनना है कि वे सबसे पहले इस बात की गवाही दें कि वह मृतकों में से जी उठा है। यह हम मत्ती 28, लूका 24 और यूहन्ना 20 के पुनरुत्थान-वृत्तांतों में देखते हैं। यह प्रतीकात्मक कार्य दिखाता है कि उत्पत्ति 3 की विपत्ति अब फिर से ठीक की जा रही है। जैसा कि थॉमस एक्विनास (Thomas von Aquin) ने कहा – हव्वा की ओर संकेत करते हुए, जिसने आदम को वर्जित फल खाने के लिए प्रेरित किया:

“जैसे एक स्त्री ही थी जिसने सबसे पहले मृत्यु के वचन सुनाए, वैसे ही एक स्त्री ही सबसे पहले जीवन के वचन सुनाएगी” (थॉमस एक्विनास, यूहन्ना रचित सुसमाचार पर टीका, यूहन्ना 20 पर व्याख्यान 3)।

1 कुरिन्थियों 7

अब हम विवाह के विषय पर नए नियम के सबसे लंबे खंड पर आते हैं: 1 कुरिन्थियों 7।

बाइबल में यही एकमात्र स्थान है जहाँ स्पष्ट रूप से विवाह में अधिकार की बात की गई है और इस बात की भी कि विवाह में निर्णय कैसे लिए जाने चाहिए।

क्या 1 कुरिन्थियों 7 में पति के पास कोई ऐसा अधिकार है जो पत्नी के पास नहीं है? नहीं। वे एक तन हैं। पद 4 में पौलुस पति के अधिकार और पत्नी के अधिकार के लिए ठीक एक ही शब्दों का प्रयोग करता है। उनका अधिकार परस्पर है।

क्या 1 कुरिन्थियों 7 में पुरुष निर्णय लेने वाला है? नहीं। पद 5 में पौलुस कहता है कि प्रार्थना में साथ समय बिताने के और शारीरिक संबंध के निर्णय आपसी सहमति से लिए जाने चाहिए। यही विवाह में पारस्परिकता है।

इफिसियों 5 और 1 पतरस 3

इफिसियों 5:21 में पौलुस सभी विश्वासियों को एक दूसरे के अधीन रहने के लिए बुलाता है, जिसमें हर कोई दूसरों के अधीन रहता है।

कुछ व्याख्याकार पतियों के लिए उनकी पत्नियों के संबंध में एक अपवाद बना देते हैं। परंतु पौलुस ऐसा नहीं करता। परमेश्वर के वचन में ऐसा कोई अपवाद निर्धारित नहीं है।

जब पौलुस पद 21 में सभी विश्वासियों को एक दूसरे के अधीन रहने के लिए बुला चुका है, तो फिर वह पद 22-24 में पत्नियों को विशेष रूप से यह याद क्यों दिलाता है कि वे अपने पतियों के अधीन रहें? संभवतः इफिसुस की कुछ मसीही पत्नियाँ सोचती थीं कि मसीह में अपने पतियों के साथ नई मिली बराबरी की स्थिति उन्हें अधीन न रहने और अपने पतियों के साथ आदर से व्यवहार न करने का कारण देती है। पौलुस उन्हें याद दिलाता है कि वे मसीह के भय से अधीन रहें और अपने पतियों का आदर करें।

इस खंड में पौलुस सिर के एक रूपक का प्रयोग करता है, ताकि स्पष्ट करे कि पति को अपनी पत्नी के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए। यह प्रभुता का रूपक नहीं है, बल्कि उस बात का जिसे हम "उद्धारकर्ता की भूमिका" कह सकते हैं (देखिए 5:23)। वह यह सोच रहा है: जब सिर किसी शरीर से जुड़ा होता है, तो वह क्या करता है? वह उसका पोषण करता है और उसकी देखभाल करता है।

उसका सिर-और-शरीर का रूपक इस प्रचलित धारणा पर आधारित है कि सिर शरीर का पोषण करता है। जैसे मसीह आत्म-बलिदानी प्रेम से अपने लोगों का पोषण करता है, जिनसे वह एक हुआ है, वैसे ही पति भी आत्म-बलिदानी प्रेम के लिए बुलाया गया है कि वह अपनी पत्नी का पोषण करे और उसकी देखभाल करे, जिसके साथ वह एक तन होकर जुड़ा है (5:25-33a)।

मेरे विचार में पौलुस यहाँ यीशु द्वारा स्थापित सिद्धांत को लागू करता है:

“जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे और भी अधिक माँगा जाएगा।” (लूका 12:48)

पतियों के पास अधिक शारीरिक बल और सामाजिक लाभ होते हैं। इसलिए अपनी पत्नियों के प्रति आत्म-बलिदानी प्रेम और सेवा की उनकी ज़िम्मेदारी अधिक है। यही उनकी सिर की भूमिका का अर्थ है।

पतरस की शिक्षा पौलुस की शिक्षा से मेल खाती है। 1 पतरस 3 में पतरस पतियों को निर्देश देता है कि वे अपनी पत्नियों के साथ नम्रता और समझदारी से व्यवहार करें और नए तथा अनन्त जीवन की संगी वारिस जानकर उनका आदर करें।

नए नियम में स्त्रियों की सेवकाई

जब हम उस वृत्तांत को देखते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा कैसे उंडेला गया, और उसे ध्यान से पढ़ते हैं, तो हम पवित्र आत्मा के कार्य को पहचान सकते हैं: स्त्रियाँ पुरुषों के साथ मिलकर पुरुषों और स्त्रियों की मिली-जुली भीड़ के सामने सार्वजनिक रूप से परमेश्वर के महान कामों का प्रचार कर रही थीं (प्रेरितों 1:14; 2:1-18)। पतरस ने योएल भविष्यद्वक्ता को उद्धृत करते हुए इस घटना को समझाया: “तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी” (प्रेरितों 2:17)।

जैसे पुराने नियम में, वैसे ही, पर अब और भी अधिक बल के साथ, परमेश्वर स्वयं स्त्रियों को प्रेरित करता है कि वे सार्वजनिक रूप से पुरुषों और स्त्रियों दोनों की सेवा करें।

प्रेरितों के काम में पिन्तेकुस्त के बाद स्त्रियाँ यीशु के संदेश को फैलाने में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं (प्रेरितों 8:1-4; 18:18-26; तुलना कीजिए प्रेरितों 11:20 में “पुरुष”)।

पत्रियों में प्रेरित पतरस और प्रेरित पौलुस दोनों सिखाते हैं कि सेवकाई आत्मिक वरदानों पर आधारित है। 1 कुरिन्थियों 12 में पौलुस कुरिन्थियों से – पुरुषों और स्त्रियों से – आग्रह करता है कि वे प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों के बड़े वरदानों की धुन में रहें।

वरदानों के विषय में शिक्षा देने वाले विभिन्न खंडों में कहीं भी ऐसा संकेत नहीं है कि परमेश्वर अगुवाई या शिक्षा के वरदान केवल पुरुषों को देता है (रोमियों 12:3-8; 1 कुरिन्थियों 12:1-30; इफिसियों 4:11-13; 1 पतरस 4:10-11)। गलातियों 3:28 को देखते हुए ऐसी कोई सीमा काफ़ी चौकाने वाली होती:

“अब न कोई यहूदी रहा न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर और नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।” (गलातियों 3:28)

नए नियम की वरदान-प्राप्त स्त्रियों में फिलिप्पुस की बेटियों जैसी भविष्यद्वक्तिनें (प्रेरितों के काम 21:9), सेविका (डीकन) फीबे (रोमियों 16:1-2), शिक्षिकाएँ मरियम और प्रिस्किल्ला, और मार्ग दिखाने वाली प्रेरित यूनिया (प्रेरितों के काम 18; रोमियों 16:3-4, 6-7; क्रिसोस्तम (Chrysostomos), रोमियों की पत्री पर प्रवचन 31) गिनी जाती हैं।

1 कुरिन्थियों 11 में हम देखते हैं कि स्त्रियाँ और पुरुष मिलकर स्थानीय कलीसियाओं में भविष्यद्वाणी करके और प्रार्थना में अगुवाई करके सक्रिय अगुवाई की भूमिका निभाते थे। इसी प्रकार पौलुस 1 कुरिन्थियों 14:26 में कहता है कि “हर एक” किसी न किसी रूप में सक्रिय योगदान देता है, शिक्षा देना भी इसमें शामिल है।

यही सेवकाई में पारस्परिकता है।

प्रकाशितवाक्य

पारस्परिकतावादी दृष्टिकोण, जिसके अनुसार पुरुष और स्त्रियाँ मिलकर अगुवाई या शासन करते हैं, प्रकाशितवाक्य 5 के महान दर्शन की ओर संकेत करता है।

यूहन्ना का दर्शन यीशु के, उस मेरे के, महान छुटकारे के कार्य का परिणाम बताता है, जिसने अपने लहू से हर कुल, हर भाषा, हर लोग और हर जाति में से मनुष्यों को मोल लिया है:

“तूने उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया, और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे!” (प्रकाशितवाक्य 5:10)

इस प्रकार मानवजाति के लिए परमेश्वर का वह उद्देश्य – पुरुष और स्त्रियाँ सह-शासक के रूप में –, जिसे हम उत्पत्ति 1 में पहले ही देख चुके हैं, अंततः पूरा होता है। यह वह दर्शन है कि सभी विश्वासी लोग परमेश्वर के याजकों के रूप में पृथ्वी पर उसका शासन चलाते हैं – केवल पुरुष नहीं।

यही सकारात्मक संदेश है: विवाह में पारस्परिकता, सेवकाई में पारस्परिकता, पुरुष और स्त्रियाँ मिलकर परमेश्वर के प्रतिनिधि।

पूरकतावादी विचारों का दस बिंदुओं में मूल्यांकन

स्पष्ट कह दूँ: पूरकतावादी भाई-बहन जिस बात पर विश्वास करते हैं, उसकी ईमानदारी पर मैं प्रश्न नहीं उठाता। पर मैं इस बात पर प्रश्न उठाता हूँ कि क्या ये विचार इस बात का सही-सही विवरण हैं कि पवित्र शास्त्र वास्तव में क्या कहता है।

पूरकतावादी शिक्षक पारस्परिकतावादियों से इस बात में सहमत हैं कि स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए मनुष्य हैं। फिर भी वे कहते हैं कि पुरुषों को स्त्रियों पर भलाई के साथ प्रभुता करनी चाहिए, उनकी अगुवाई करनी चाहिए, उन पर अधिकार चलाना चाहिए या उनके लिए निर्णय लेने चाहिए।

वे पुरुषों की अगुवाई के मूल पारंपरिक कारण पर निर्भर नहीं रहते। अब बात यह नहीं रही कि स्त्रियाँ स्वभाव से हीन हैं। बल्कि वे कहते हैं कि परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को अलग-अलग “भूमिकाएँ” सौंपी हैं – विवाह में, कलीसिया में और शायद व्यापक अर्थ में समाज में भी।

हम उन दस बिंदुओं को देखेंगे जिनमें हम पूरकतावादी दृष्टिकोण की तुलना उस बात से करते हैं जो पवित्र शास्त्र कहता है।

पर ऐसा करने से पहले हमें ध्यान देना चाहिए कि “भूमिका” शब्द बाइबल में आता ही नहीं।

जब यह मान लिया गया कि स्त्रियों के बारे में कलीसिया का पारंपरिक बहुमत-मत ग़लत था, तब पूरकतावादियों ने स्त्रियों को पुरुषों की अगुवाई के अधीन रखने का एक नया औचित्य विकसित किया, और इसके लिए उन्होंने “भूमिकाओं” की समाजशास्त्रीय भाषा का सहारा लिया।

पुरुषों और स्त्रियों की “भूमिकाओं” की यह धारणा बीसवीं सदी का आविष्कार थी। पहली से उन्नीसवीं सदी तक की बाइबल-टीकाओं में इसका कोई संकेत नहीं मिलता। परंतु *Recovering Biblical Manhood and Womanhood* के 1991 के संस्करण में “भूमिका” शब्द 700 से अधिक बार प्रयुक्त हुआ है।

क्योंकि परमेश्वर ने स्त्रियों को पुरुषों जैसे ही नैतिक और बौद्धिक गुण दिए हैं और उन्हें अगुवाई के वरदान दिए हैं, इसलिए “भूमिकाओं” के इस कथित बँटवारे का कोई विश्वसनीय कारण दिखाई नहीं देता – फिर भी वे ठीक यही बँटवारा सिखाते हैं।

1) उत्पत्ति 2 और 3

पूरकतावादी विद्वानों के अनुसार उत्पत्ति के अध्याय 2 और 3 दिखाते हैं कि परमेश्वर ने पुरुषों को इसलिए ठहराया है कि वे स्त्रियों या अपनी पत्नियों के प्रति भलाई भरी अगुवाई की भूमिका निभाएँ। वे दावा करते हैं कि इन अध्यायों में उन्हें पुरुष-अगुवाई के “संकेत” मिलते हैं।

इस विषय के साहित्य को देखते हुए मुझे 13 ऐसी बातें मिलीं जिन्हें विभिन्न विद्वानों ने इन दो अध्यायों में पुरुष-अगुवाई के संकेत के रूप में प्रस्तुत किया है।

एक उदाहरण लें: स्त्री को परमेश्वर ने पुरुष की “सहायक” के रूप में रचा। कहा जाता है कि यह एक ऐसा संकेत है जिसमें पुरुष की अगुवाई की भूमिका निहित है।

यदि उत्पत्ति मूल रूप से अंग्रेज़ी में लिखी गई होती, तो शायद हम उसमें ऐसा कोई निहितार्थ देख पाते। हम “सहायक” (अंग्रेज़ी में helper) शब्द का प्रयोग अधिकतर किसी अधीनस्थ सहयोगी के अर्थ में करते हैं।

परंतु उत्पत्ति की पुस्तक इब्रानी में लिखी गई थी। “सहायक” के लिए शब्द है *ezer*। इब्रानी में अक्सर कहा जाता है कि परमेश्वर इस्राएल का *ezer* है। पर इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं कि परमेश्वर ने इस्राएल को परमेश्वर का अगुवा ठहराया हो! *ezer* शब्द का यह कथित निहितार्थ इब्रानी भाषा में है ही नहीं।

अब हम सभी 13 कथित संकेतों को एक-एक करके देख सकते हैं और दिखा सकते हैं कि वे क्यों समस्यापूर्ण हैं। परंतु निर्णायक बात कुछ और है, और कहीं अधिक सरल है।

निर्णायक बात यह है: कथित संकेत पर्याप्त नहीं हैं।

यदि कोई दावा करता है कि पुरुषों पर स्त्रियों की अगुवाई करने का परमेश्वर-प्रदत्त कर्तव्य है, तो हमें यह पूछने का अधिकार है: पुरुषों को यह आज्ञा कहाँ दी गई है? पुरुषों से कहाँ कहा गया है कि यह उनका परमेश्वर-प्रदत्त कर्तव्य है?

उत्पत्ति 2 या उत्पत्ति 3 में न तो पुरुषों को ऐसी कोई आज्ञा दी गई है, न ही पुरुषों के कर्तव्य के बारे में ऐसा कोई कथन है। यह पवित्र शास्त्र में जोड़ी गई बात है।

2) सामान्य रूप से पुराना नियम

पूरकतावादी विद्वानों के अनुसार पुराना नियम दिखाता है कि परमेश्वर ने अगुवाई की भूमिका पुरुषों के लिए सुरक्षित रखी है। इसके लिए वे पुरुष राजाओं और पुरुष याजकों का हवाला देते हैं।

यह विचार करना उपयोगी होगा कि राजाओं और याजकों पर आधारित उनके तर्क क्यों टिकाऊ नहीं हैं।

परंतु पुराने नियम के विषय में निर्णायक बात बहुत सरल है: वास्तव में अगुवाई की भूमिका पुरुषों के लिए सुरक्षित नहीं है। हम पहले ही देख चुके हैं कि दबोरा मूसा और शमूएल के समान थी। परमेश्वर का दबोरा को अपनी प्रजा की अगुवा चुनना इस धारणा का खंडन करता है कि परमेश्वर ने अगुवाई की भूमिका पुरुषों के लिए सुरक्षित रखी है। यह नियम बाद में पुराने नियम में जोड़ा गया; वह उसमें है ही नहीं।

और यदि कोई यह तर्क दे ... नहीं – पाठ में इसका कोई संकेत नहीं है कि इस्राएल पर एक सफल अगुवा स्त्री को ठहराना, जिसके अधीन देश 40 वर्ष तक शांत रहा, किसी तरह इस्राएल के लिए परमेश्वर का दंड था। न परमेश्वर और न ही प्रजा दबोरा के अगुवा होने पर कोई आपत्ति प्रकट करते हैं।

3) यीशु

हम विस्तार से इस पर चर्चा कर सकते हैं कि यीशु ने स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार किया, और उन विभिन्न सिद्धांतों पर भी कि यीशु ने बारह पुरुष प्रेरित क्यों चुने। परंतु सुसमाचारों में निर्णायक बात यीशु की शिक्षा के बारे में दो तथ्यों में है।

तथ्य 1: यीशु ने सोच-समझकर अपने चेलों को बहुत-सी कालातीत आज्ञाएँ दीं, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए महत्व रखने वाली थीं।

महान आदेश भविष्य के चेलों से माँग करता है कि वे नए चले बनाएँ और “उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाएँ” (मत्ती 28:20)। इसलिए विश्वासयोग्य चले होने के लिए हमें ठीक-ठीक इस पर ध्यान देना चाहिए कि यीशु ने क्या आज्ञा दी।

तथ्य 2: यीशु की दी हुई कालातीत आज्ञाओं में अगुवाई के बारे में, विवाह के बारे में और चलेपन के बारे में आज्ञाएँ शामिल थीं। परंतु उसने सोच-समझकर ऐसी कोई आज्ञा नहीं दी कि अगुवाई केवल पुरुषों के लिए सुरक्षित है, चाहे कलीसिया में, विवाह में या कहीं और।

पूरकतावादी मानते हैं कि यह महत्वपूर्ण है कि पुरुष अगुवाई करें, कम से कम विवाह में और कलीसिया में। पर ऐसा लगता है कि यीशु, हमारा अगुवा और प्रभु, इस विश्वास से सहमत नहीं था। यदि यह महत्वपूर्ण होता, तो वह इसे सिखाता। उसने ऐसा नहीं किया।

4) 1 कुरिन्थियों 7

यह विचार करना ज्ञानवर्धक होगा कि पूरा अध्याय पुरुषों और स्त्रियों के संबंधों में पूर्ण बराबरी के पौलुस के दृष्टिकोण को कैसे स्पष्ट करता है। परंतु मूल बात को सामने लाने के लिए हम केवल पद 5 पर ध्यान देते हैं, जिसमें पौलुस मसीही दंपतियों को निर्देश देता है कि उन्हें शारीरिक संबंध और साथ प्रार्थना के समय के बारे में निर्णय कैसे लेने चाहिए – आपसी सहमति से।

पूरकतावादियों को यह दावा करना पड़ता है कि यह निर्देश पति की अगुवाई की भूमिका और उसकी निर्णय-ज़िम्मेदारी का एक विशेष अपवाद है।

पर किसी विशेष अपवाद की धारणा का कोई अर्थ नहीं बनता। यहाँ बात महत्वपूर्ण – बल्कि केंद्रीय – विषयों की है। शारीरिक संबंध वह शारीरिक घनिष्टता है जो विवाह को अन्य सभी संबंधों से अलग करती है। साथ मिलकर प्रार्थना करना विवाह का आत्मिक हृदय है। यदि इन केंद्रीय शारीरिक और आत्मिक विषयों में निर्णय आपसी सहमति से लिए जाने हैं, तो यह तर्क देना कैसे समझ में आ सकता है कि वैवाहिक संबंध के अन्य, कम महत्वपूर्ण पहलुओं में पति को किसी तरह अगुवाई की भूमिका निभानी है और निर्णय लेने हैं?

इसका कोई विश्वसनीय उत्तर नहीं दिया जा सकता।

1988 में पूरकतावादी स्थिति को डैनवर्स वक्तव्य (Danvers Statement) में सावधानी से लिखा गया, जिस पर बहुत-से जाने-माने पास्टर्स और धर्मवैज्ञानिकों ने हस्ताक्षर किए। परंतु इस बिंदु पर डैनवर्स वक्तव्य बस विफल हो जाता है। वह बाइबल के इस महत्वपूर्ण खंड के अस्तित्व को स्वीकार तक नहीं करता।

5) इफिसियों 5 और 1 पतरस 3

इफिसियों 5 और 1 पतरस 3 में बहुत-सी रोचक बातें हैं जिन पर हम उचित कारण से चर्चा कर सकते हैं। हम उन विरोधी विचारों पर विचार कर सकते हैं कि इफिसियों 5:23 में अपने “सिर” वाले रूपक से पौलुस का क्या अर्थ है। हम पतरस के सारा वाले उल्लेख की विभिन्न व्याख्याओं पर चर्चा कर सकते हैं, जिसने अब्राहम को “स्वामी” कहा – जो उसने अविश्वास भरी हँसी में मन ही मन धीरे से बुदबुदाया था (1 पतरस 3:6; उत्पत्ति 18:12)। परंतु निर्णायक बात के लिए यह आवश्यक नहीं कि हम इस पर विचार करें कि पौलुस का “सिर” से क्या अर्थ था, या पतरस के तर्क के विवरणों की व्याख्या करें। क्योंकि निर्णायक बात यह नहीं है कि पौलुस और पतरस क्या कहते हैं; **बात यह है कि वे क्या नहीं कहते।**

हम इफिसियों 5 और 1 पतरस 3 में पतियों के लिए ऐसा कोई निर्देश खोज सकते हैं कि वे अपनी पत्नियों पर प्रभुता करें, उनकी अगुवाई करें, उन पर अधिकार चलाएँ या उनके लिए निर्णय लें। पर हमें वह नहीं मिलेगा, क्योंकि ऐसे निर्देश हैं ही नहीं।

पौलुस पतियों से कहता है कि वे अपनी पत्नियों से प्रेम करें। वह यह तीन बार कहता है। पतरस पतियों से कहता है कि वे अपनी पत्नियों के साथ समझदारी से व्यवहार करें और उनका आदर करें। परंतु दोनों में से कोई भी प्रेरित पुरुषों को वे निर्देश नहीं देता जो पूरकतावादी बताते हैं।

डैनवर्स वक्तव्य पुरुषों के उस कथित कर्तव्य को, कि वे अपनी पत्नियों की अगुवाई करें, बहुत महत्वपूर्ण बताता है। वह दावा करता है कि अपने अगुवाई के कर्तव्य की उपेक्षा या उसे अस्वीकार करने से परिवारों में विनाशकारी परिणाम होंगे (डैनवर्स वक्तव्य, अंगीकार 10)। परंतु परमेश्वर की कोई आज्ञा गढ़ना और यह दावा करना उचित नहीं है कि पुरुषों के लिए उसका पालन करना बहुत महत्वपूर्ण है।

जब पूरकतावादी कहते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि पति अपनी पत्नियों पर प्रभुता करें, उनकी अगुवाई करें, और उन पर अधिकार चलाएँ या उनके लिए निर्णय लें, तो वे परमेश्वर के वचन में मनुष्यों की एक परंपरा जोड़ देते हैं।

6) नए नियम में स्त्रियों की सेवकाई

जब नए नियम में स्त्रियों की सेवकाई की बात आती है, तो पूरकतावादी व्याख्याकारों का सामान्य तरीका यह है कि स्त्रियों ने जो किया, उसका दर्जा घटा दिया जाए या उसे छोटा करके दिखाया जाए।

उनकी व्याख्याओं की कमज़ोरियों के बारे में हम बहुत कुछ कह सकते हैं। परंतु सबसे स्पष्ट और सबसे महत्वपूर्ण बात वह कठिनाई है जो उन्हें प्रिस्किल्ला के उदाहरण से होती है, जो प्रेरितों के काम 18 में अपुल्लोस को शिक्षा देती है।

वे कहते हैं: अरे, वह तो बस कुछ साधारण विश्वासियों के बीच एक निजी धर्मवैज्ञानिक बातचीत थी। परंतु यदि हम संदर्भ पर ध्यान दें, तो यह व्याख्या पर्याप्त नहीं है।

जिसने यह कहानी पढ़ी है, वह जानता है कि क्या होता है।

कलीसिया-स्थापना करने वाली तीन लोगों की एक टीम इफिसुस पहुँचती है – पौलुस, प्रिस्किल्ला और अक्विला। पौलुस आराधनालय में सुसमाचार का प्रचार कर पाता है और वहाँ यहूदियों से उसे अच्छी प्रतिक्रिया मिलती है। वे चाहते हैं कि वह रुके और शिक्षा देता रहे, पर वह आगे जाने का निर्णय लेता है।

तो जब वह आगे जाता है, तो विश्वासियों के इस नए समूह की देखभाल के लिए वह किसे वहाँ छोड़ता है? वे प्रिस्किल्ला और अक्विला ही होंगे। वे टीम के वे दो सदस्य हैं जो पीछे रह जाते हैं।

जब अपुल्लोस आता है, तो प्रिस्किल्ला और अक्विला उसे बोलते हुए सुनते हैं और चिंतित होते हैं। यद्यपि वह विद्वान और प्रभावशाली वक्ता है, फिर भी अपुल्लोस को परमेश्वर के मार्ग को और ठीक-ठीक समझने की आवश्यकता है। इसलिए प्रिस्किल्ला और अक्विला उसे अलग ले जाकर शिक्षा देते हैं।

आरंभिक सदियों के टीकाकारों ने भली-भाँति समझा था कि प्रिस्किल्ला का नाम उसके पति के नाम से पहले इसलिए आता है क्योंकि वही मुख्य शिक्षिका थी (उदाहरण के लिए क्रिसोस्तम (Chrysostomos), रोमियों की पत्री पर प्रवचन 30; क्रिसोस्तम, प्रिस्किल्ला और अक्विला पर पहला प्रवचन)।

अब प्रभावशाली अपुल्लोस प्रिस्किल्ला और अक्विला की बात क्यों सुने या उन पर ध्यान ही क्यों दे – विशेषकर जब मुख्य शिक्षक एक स्त्री है? क्योंकि वे पौलुस के सहकर्मियों हैं, जिन्हें उसने वहाँ नए विश्वासियों को शिक्षा देने और उनकी देखभाल करने के लिए छोड़ा है।

जब वे अपुल्लोस को सुधारते हैं, तो यह केवल किन्हीं भी विश्वासियों के बीच एक निजी बातचीत नहीं है। टीम के शेष सदस्यों के रूप में, जो नए विश्वासियों की आत्मिक देखभाल के लिए उत्तरदायी हैं, वे उसे सुधारने के लिए अपने अधिकार का प्रयोग करते हैं।

लूका यह कहानी यह दिखाने के लिए जोड़ता है कि पौलुस ने अपने प्रशिक्षित सहकर्मियों – स्त्रियों और पुरुषों – के द्वारा अपनी सेवकाई को कैसे फैलाया। यह उस पद्धति का उदाहरण है जिसका वर्णन पौलुस 2 तीमुथियुस 2:2 में तीमुथियुस के सामने करता है:

“जो बातें तूने बहुत-से गवाहों के सामने मुझसे सुनी हैं, उन्हें विश्वासयोग्य लोगों को सौंप दे, जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।” (2 तीमुथियुस 2:2)

ये विश्वासयोग्य लोग या मनुष्य केवल पुरुष नहीं, बल्कि स्त्रियाँ और पुरुष हैं। इस पद में लिंग का कोई निर्धारण नहीं है।

7) 1 कुरिन्थियों 11

1 कुरिन्थियों 11:2–16 बालों की बनावट या सिर ढकने के विषय में पवित्र शास्त्र का कठिन खंड है।

पौलुस पुरुषों और स्त्रियों दोनों को उस स्थिति के लिए कुछ सुधारात्मक निर्देश देता है जब वे भविष्यद्वाणी करके या ऊँचे स्वर से प्रार्थना करके कलीसिया की अगुवाई करते हैं। कुरिन्थी जानते थे कि कुरिन्थुस में और उनकी कलीसियाओं में क्या हो रहा है, इसलिए उसके निर्देश उनके लिए समझने में कठिन नहीं रहे होंगे। पर हमारे लिए यह अधिक कठिन है। इसकी पृष्ठभूमि पर बहुत चर्चा होती है।

पूरकतावादी इस खंड का उपयोग अगुवाई की भूमिका वाले अपने धर्मविज्ञान के लिए करते हैं। वे पद 3 में पौलुस के “सिर” वाले रूपक की विवादास्पद व्याख्या करते हैं, पद 10 में शब्द जोड़ देते हैं और इस प्रकार उसका अर्थ ऐसा मोड़ देते हैं कि वह उसके ठीक उलट कहने लगता है जो वहाँ वास्तव में लिखा है।

अपनी नई पुस्तक में मैं इस अध्याय की एक ऐसी व्याख्या प्रस्तुत करता हूँ, जो फिल पेन (Phil Payne) की बड़ी सहायता से बनी है और जिसमें सब कुछ अर्थपूर्ण ढंग से एक साथ बैठता है, और मैं आठ बातें गिनाता हूँ जिनमें

इस खंड की पूरकतावादी व्याख्याएँ पौलुस के वास्तविक शब्दों के विरोध में हैं।

पर यहाँ हमें इसमें विस्तार से जाने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि जैसा कहा गया, निर्णायक बात बहुत सरल है। इस खंड की व्याख्या चाहे जैसे भी की जाए, स्पष्ट और निर्विवाद तथ्य यह है कि 1 कुरिन्थियों 11 में पौलुस स्त्रियों की सेवकाई के दायरे पर कोई सीमा नहीं लगाता।

वह स्वीकार करता है कि स्त्रियाँ पुरुषों और स्त्रियों दोनों के सामने भविष्यद्वाणी करती हैं। वह स्वीकार करता है कि स्त्रियाँ पुरुषों और स्त्रियों की उपस्थिति में ऊँचे स्वर से प्रार्थना करती हैं। वह स्त्रियों को न प्रचार करने से रोकता है, न पुरुषों को शिक्षा देने से, न पास्टर की सेवकाई करने से या किसी कलीसिया की अगुवाई करने से, न ही सेवकाई के किसी अन्य कार्य से।

स्त्रियों की सेवकाई पर पूरकतावादी प्रतिबंध इस खंड में नहीं हैं।

8) 1 कुरिन्थियों 14:34-35

ये पद तीन बार, तीन अलग-अलग तरीकों से कहते हैं कि स्त्रियों को कलीसिया में पूरी तरह चुप रहना चाहिए।

जर्मन एल्बरफ़ेल्डर CSV (Elberfelder CSV) अनुवाद (जर्मन बाइबल अनुवाद) पद 34-35 को इस प्रकार देता है:

[1] स्त्रियाँ सभाओं में चुप रहें।

[2] क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है, बल्कि वे अधीन रहें, जैसा व्यवस्था भी कहती है।

[3] परंतु यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर पर अपने-अपने पतियों से पूछें; क्योंकि स्त्री का सभा में बोलना लज्जा की बात है।

इन शब्दों के बारे में सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि ये पौलुस का अपना मत व्यक्त नहीं करते।

पौलुस ने अध्याय 11, 12, 13 और 14 में यह शिक्षा दी है कि इकट्ठी हुई कलीसिया में पुरुषों और स्त्रियों के बोलकर दिए गए योगदानों को उनके आत्मिक वरदानों के अनुसार कैसे व्यवस्थित किया जाए, ताकि उनके योगदान आदरपूर्ण, प्रेमपूर्ण और उचित व्यवस्था के साथ हों। पर यदि स्त्रियों को बोलने की अनुमति ही न हो, तो वे अपने वरदानों के अनुसार बोलकर कोई योगदान नहीं दे सकतीं।

अधिकांश पूरकतावादी व्याख्याकार बिना हिचक मान लेते हैं कि पौलुस का अर्थ वह नहीं हो सकता जो ये पद वास्तव में कहते हैं: कि स्त्रियों को कलीसिया में चुप रहना है और वे बोल नहीं सकतीं।

अग्रणी पूरकतावादी मत यह है कि पौलुस यहाँ स्त्रियों के केवल एक विशेष प्रकार के बोलने को रोकना चाहता है – अर्थात् भविष्यद्वाणियों को परखना या उनका मूल्यांकन करना, जो उनके विचार में “पुरुष की अगुवाई की भूमिका” के विरुद्ध होगा। पर यह मत टिकाऊ नहीं है। यह उन स्पष्ट शब्दों के विरोध में है, जो ज़ोरदार और बिना किसी शर्त के हैं।

यदि यह धारणा सही होती कि भविष्यद्वाणियों को परखना वर्जित है:

- तो पौलुस अपने सुनने वालों को भटका रहा है, क्योंकि वह स्पष्ट और साफ़ शब्दों में स्त्रियों के हर प्रकार के बोलने पर पूर्ण प्रतिबंध घोषित करता है, जबकि कथित रूप से उसका इरादा केवल स्त्रियों को भविष्यद्वाणियाँ परखने से रोकना है।

- तो वह अपने सुनने वालों को और भी भटका रहा है, क्योंकि वह इस पूर्ण प्रतिबंध पर विशेष ज़ोर देने के लिए उसे तीन बार दोहराता है।
- तो वह उन्हें भटका रहा है, क्योंकि वह स्पष्ट कहता है कि बोलने का प्रतिबंध तब लागू होता है जब स्त्रियाँ कलीसिया में हों, जबकि कथित रूप से वह उसे केवल तब लागू करना चाहता है जब भविष्यद्वाणियाँ परखी जा रही हों।
- तो वह प्रतिबंध के लागू होने के एकमात्र ठोस उदाहरण के रूप में तर्कहीन ढंग से सीखने की इच्छा से प्रश्न पूछने का उल्लेख करता है, जो उस कार्य से भिन्न कार्य है जिसे वह कथित रूप से रोकना चाहता है।
- तो वह उस बात का खंडन करता है जो उसने अभी-अभी पद 29 में इस बारे में कही है कि भविष्यद्वाणियों को कौन परखे। पद 29 में वह कहता है कि “दूसरे” कही गई बात को परखें – अर्थात् दूसरे भविष्यद्वाक्ता भविष्यद्वाणी को परखें। “दूसरों” में पुरुष और स्त्रियाँ दोनों शामिल हैं।
- वास्तव में वह अध्याय 11 से 14 तक की अपनी शिक्षा के पूरे मूल विचार का खंडन करता है, अर्थात् यह कि कलीसिया का हर अंग अपने आत्मिक वरदानों के अनुसार योगदान दे – जिसका अर्थ है कि बोलने का वरदान रखने वाली स्त्रियाँ उसका उपयोग करें और चुप न रहें।

यह नियम कि स्त्रियाँ भविष्यद्वाणियाँ नहीं परख सकतीं, पाठ में है ही नहीं।

निर्णायक बात यह है: जब हम देखते हैं कि ये दो पद बिल्कुल स्पष्ट रूप से क्या कहते हैं, तो हम निश्चित हो सकते हैं कि ये दो पद पौलुस का अपना मत व्यक्त नहीं करते।

यहाँ क्या हो रहा है, इसे समझने की केवल दो यथार्थवादी संभावनाएँ हैं।

पहली यथार्थवादी संभावना यह है कि वह विरोधियों के एक विशेष समूह को उद्धृत कर रहा है, ताकि आगे जो वह कहता है (पद 36 से 40 में), उसमें उनका खंडन करे।

दूसरी यथार्थवादी संभावना यह है कि ये दो पद बाद में जोड़े गए हैं, जो इस प्रकार आए कि किसी आरंभिक प्रतिलिपि की हाशिये की टिप्पणी पत्री की दोबारा नकल करते समय मुख्य पाठ में ले ली गई। नए नियम की हस्तलिपियों में इसके और भी उदाहरण हैं।

हस्तलिपियों की उन विशेष बातों के कारण, जिनकी व्याख्या आवश्यक है, मैं दूसरी धारणा को – बाद में जोड़े जाने की धारणा को – संभवतः सही मानता हूँ।

डैनर्वर्स वक्तव्य (Danvers Statement) समझदारी से इन दो पदों पर निर्भर नहीं करता। यह समझदारी भरा संयम है, क्योंकि किसी को भी इनकी ऐसी संतोषजनक व्याख्या का मार्ग नहीं मिला जिससे वे पौलुस का अपना मत व्यक्त करते दिखें। इसका कारण यह है कि ये पद पौलुस का अपना मत व्यक्त नहीं करते।

9) 1 तीमुथियुस 2

1 तीमुथियुस की पत्री में पौलुस इफिसुस में तीमुथियुस को लिखता है और उसे झूठी शिक्षा और उसके परिणामों से निपटने के लिए निर्देश देता है।

पूरकतावादियों में सबसे लोकप्रिय अंग्रेज़ी बाइबल अनुवाद ESV है। ESV में 1 तीमुथियुस 2:12 इस प्रकार है:

“मैं किसी स्त्री को शिक्षा देने या किसी पुरुष पर अधिकार चलाने की अनुमति नहीं देता।”

जर्मन एल्बरफ़ेल्डर CSV अनुवाद इसे ऐसे देता है:

“परंतु मैं किसी स्त्री को न शिक्षा देने की अनुमति देता हूँ, न पुरुष पर प्रभुता करने की, बल्कि यह कि वह शांत रहे।”

पूरकतावादी विचारधारा में इस पद का बहुत बड़ा महत्व है, क्योंकि यह स्त्रियों की सेवकाई पर सामान्य प्रतिबंधों को उचित ठहराता है।

अगले दो पद – पद 13 और 14 – आदम और हव्वा का उल्लेख करते हैं। पद 12 की पूरकतावादी व्याख्याएँ पौलुस को इस अर्थ में समझती हैं कि वह आचरण का एक सामान्य नियम निर्धारित करता है – एक ऐसा नियम, जो परमेश्वर की उस इच्छा पर आधारित है जो उत्पत्ति में, आदम और हव्वा की कहानी में, प्रकट हुई है। वे मानते हैं कि पौलुस स्त्री पर पुरुष के अधिकार के एक सृष्टि-सिद्धांत की ओर संकेत करता है।

इस पर एक महत्वपूर्ण बहस है कि क्या पौलुस यहाँ सचमुच किसी सृष्टि-सिद्धांत की ओर संकेत करता है, या फिर वह आदम और हव्वा की कहानी की ओर इसलिए ध्यान दिलाता है कि तीमुथियुस उसे उस खतरे के उदाहरण के रूप में उपयोग करे जो तब उत्पन्न होता है जब एक बहकाई हुई स्त्री किसी पुरुष को शिक्षा देती है।

इस पर भी एक महत्वपूर्ण बहस है कि क्या “अधिकार चलाना” एक सही अनुवाद है। मेरे विचार में “दबा लेना” या “हावी होना” या “वर्चस्व जमाना” बेहतर अनुवाद होगा।

पद 11 और 12 में एकवचन “स्त्री” के बारे में भी एक महत्वपूर्ण बहस है। क्या यह इफिसुस का कोई विशेष व्यक्ति है, जिसका नाम पौलुस नहीं लेना चाहता, या वह किसी प्रकार का सामान्य कथन कर रहा है? यदि वह सामान्य कथन कर रहा है, तो इस समूह को बनाने वाली स्त्रियाँ कौन हैं? क्या वे सभी स्त्रियाँ हैं, या वे कुछ विशेष धनी स्त्रियाँ हैं जिनके बारे में वह अभी-अभी पद 9 और 10 में बोल चुका है?

इस पर भी एक महत्वपूर्ण बहस है कि पद 12 में “पुरुष” शब्द एकवचन में क्यों है। पूरकतावादी कहते हैं कि किसी स्त्री का एक पुरुष को शिक्षा देना ठीक है, जैसा प्रिस्किल्ला ने किया, पर स्त्रियों को पुरुषों के समूहों को शिक्षा नहीं देनी चाहिए – जो बात पौलुस इस तरह नहीं कहता।

परंतु हमारे उद्देश्य के लिए हमारा मुख्य ध्यान पद 12 के छोटे-से वाक्यांश पर है: “परंतु मैं अनुमति नहीं देता”।

यूनानी में ये केवल दो शब्द हैं: *ouk epitrepō*, जिनका अनुवाद संदर्भ के अनुसार या तो “मैं अनुमति नहीं देता” या “मैं अभी इस समय अनुमति नहीं देता” किया जा सकता है।

मेरे विचार में “मैं अभी इस समय अनुमति नहीं देता” संदर्भ से अधिक मेल खाता है, पर हम “परंतु मैं अनुमति नहीं देता” वाले अनुवाद पर ही बने रहें।

यह छोटा-सा वाक्यांश, “मैं अनुमति नहीं देता” या *ouk epitrepō*, पूरकतावादी व्याख्या के लिए एक अलंघ्य बाधा है। क्योंकि पौलुस का यह शब्द-चयन इस बात का स्पष्ट संकेत है कि वह परमेश्वर की प्रकट इच्छा पर आधारित कोई सामान्य नियम स्थापित नहीं कर रहा।

मैं इसे समझाता हूँ।

पुरुष के “सिर होने” के पूरकतावादी धर्मविज्ञान के अनुसार पौलुस कहता है कि किसी स्त्री का पुरुष पर अधिकार चलाना ग़लत है (पद 12), क्योंकि परमेश्वर ने आदम को हव्वा से पहले रचा (पद 13), और सृष्टि के इस क्रम से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि परमेश्वर की योजना के अनुसार स्त्रियों का पुरुषों पर अधिकार होना ग़लत है। इससे यह निकलता है कि स्त्री पर पुरुष के अधिकार की परमेश्वर की सृष्टि-योजना का उल्लंघन, पुरुषों और स्त्रियों के लिए परमेश्वर की प्रकट इच्छा की अवज्ञा के समान है।

परमेश्वर की प्रकट इच्छा की अवज्ञा करना पाप है। जान-बूझकर ऐसा करना परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह है। इसी के अनुसार डैनवर्स वक्तव्य में कहा गया है कि स्त्रियों का “अपनी भूमिकाओं की सीमाओं का विरोध करना” पापपूर्ण है (डैनवर्स वक्तव्य, अंगीकार 4)।

पर यदि पौलुस किसी ऐसी बात के बारे में बोल रहा है जो परमेश्वर की प्रकट इच्छा के प्रति पापपूर्ण अवज्ञा के बराबर है, तो हम पौलुस के शब्द-चयन को कैसे समझाएँ? पौलुस पाप करने की, परमेश्वर की अवज्ञा करने की या विद्रोह करने की अनुमति न दे सकता है, न रोक सकता है। जिस नियम के बारे में पूरकतावादी दावा करते हैं कि पौलुस उसे प्रस्तुत कर रहा है, उसका स्वरूप पौलुस के शब्द-चयन “मैं अनुमति नहीं देता” या *ouk epitrepō* के विरोध में है।

कल्पना कीजिए कि आप एक प्रसिद्ध मसीही अगुवे हैं, जो – मान लीजिए – मानव जीवन की पवित्रता और हत्या के पापपूर्ण होने की शिक्षा देते हैं और अपनी शिक्षा को उत्पत्ति की पुस्तक से पुष्ट करते हैं, क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं, जैसा उत्पत्ति 1:26–27 में लिखा है, और उत्पत्ति 5:3 में भी, और फिर उत्पत्ति 9:6 में। क्या आप सचमुच कल्पना कर सकते हैं कि आप यह कहें या लिखें: “मैं हत्या करने की अनुमति नहीं देता, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में रचा है”?

यह कल्पना करना कठिन है कि पोप भी इस तरह बोलेंगे। इसका कारण यह है कि हत्या सही है या ग़लत, यह आपका (या पोप का) निर्णय नहीं है, और उसकी अनुमति देना या न देना आपके (या पोप के) अधिकार में नहीं है। हत्या मनुष्यों के लिए परमेश्वर की प्रकट इच्छा के विरुद्ध है। परमेश्वर की प्रकट इच्छा की अवज्ञा करना पाप है।

यदि आप किसी कारण से इस प्रतिबंध को व्यक्त करने के लिए “अनुमति” शब्द का ही प्रयोग करना ठान लें, तो आप उसे अवैयक्तिक बनाकर यह जताएँगे कि यह एक सामान्य नियम है, जैसे “परमेश्वर का वचन हत्या की अनुमति नहीं देता” या “हत्या करने की अनुमति नहीं है”।

हत्या का उदाहरण उत्पत्ति से उसके संबंध के कारण उपयुक्त है। हत्या निस्संदेह एक चरम उदाहरण है। पर परमेश्वर की प्रकट इच्छा के विरुद्ध कोई पाप चाहे बड़ा हो या छोटा – मूल बात वही रहती है।

अब मैं मानता हूँ कि पौलुस अपनी पत्नी एक प्रेरित के रूप में लिखता है और ऐसा करते हुए एक ऐसी कलीसिया पर अपने आत्मिक अधिकार का प्रयोग करता है जिसे उसने स्वयं खड़ा किया है। फिर भी, यदि पौलुस सृष्टि पर आधारित कोई ऐसा प्रतिबंध व्यक्त करना चाहता है जो पुरुषों और स्त्रियों के लिए परमेश्वर की प्रकट इच्छा को दर्शाता है और जिसकी अवहेलना पापपूर्ण और विद्रोहपूर्ण है, तो व्यक्तिगत रूप से अनुमति न देने वाला उसका यह शब्द-विन्यास अत्यंत विचित्र है। वास्तव में यह इतना पूरी तरह अनुपयुक्त है कि उसकी विचित्रता को पर्याप्त रूप से व्यक्त करने के लिए शब्द ढूँढना कठिन है।

एक पास्टर के रूप में आप अपने झुंड से यह नहीं कहेंगे: “मैं तुम्हें व्यभिचार करने की अनुमति नहीं देता” या “मैं तुम्हें चोरी करने की अनुमति नहीं देता”।

बाइबल पुस्तकों का एक बड़ा पुस्तकालय है और उसमें आचरण के बहुत-से सामान्य नियम हैं, पर – जैसा कि आश्चर्य की बात नहीं – उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक बाइबल में कहीं भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ कोई ग़लत आचरण के सामान्य प्रतिबंध को “मैं अनुमति नहीं देता” या “मैं अभी इस समय अनुमति नहीं देता” वाक्यांश से व्यक्त करता हो। इसका कोई उदाहरण है ही नहीं।

इस मूलभूत आपत्ति के उत्तर में पूरकतावादी विद्वान क्या कहते हैं? वे किसी ऐसे कथित सामान्य प्रतिबंध के लिए, जो पुरुष और स्त्री के लिए परमेश्वर की सृष्टि-योजना पर आधारित हो, ऐसे बेमिसाल और अनुपयुक्त शब्द-चयन को कैसे समझाते हैं?

मैंने पूरकतावादी विद्वानों के लेखों को और माइक विंगर (Mike Winger) के वीडियो को भी देखा है और मुझे इसका कोई उत्तर नहीं मिला। (अंत-टिप्पणी देखिए।)¹

पूरकतावादी व्याख्या पौलुस के शब्दों से मेल नहीं खाती।

पौलुस के शब्द-चयन की स्वाभाविक व्याख्या यह है कि वह आचरण का कोई सामान्य नियम, कोई सामान्य प्रतिबंध व्यक्त नहीं कर रहा; बल्कि वह झूठी शिक्षाओं के प्रभाव को सीमित करने के लिए बहकाई हुई स्त्रियों के एक विशेष समूह पर एक रोक लगा रहा है।

जैसा टिम मस्कारा (Tim Mascara) ने कहा है: 1 तीमुथियुस 2 कोई आदर्श नक्शा नहीं, बल्कि एक मरहम-पट्टी है। <https://timmascara.substack.com/p/reading-1-timothy-together-part-1>.

10) 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1

पौलुस 1 तीमुथियुस 3:1–7 और तीतुस 1:5–9 में प्राचीनों की योग्यता के मानदंडों की सूचियाँ देता है।

कुछ प्रतिष्ठित पूरकतावादी विद्वान मानते हैं कि ये सूचियाँ स्त्रियों को स्पष्ट रूप से बाहर नहीं करतीं। परंतु अन्य लोग यह तर्क देते हैं कि ये सूचियाँ स्त्रियों को निश्चय ही बाहर करती हैं, क्योंकि पौलुस उनमें एक ऐसी अभिव्यक्ति का प्रयोग करता है जिसका शाब्दिक अनुवाद “एक ऐसा पुरुष, जो केवल एक स्त्री का है” किया जा सकता है। यह अभिव्यक्ति 1 तीमुथियुस 3:2 और तीतुस 1:6 में मिलती है। इसका अनुवाद अलग-अलग ढंग से किया जाता है, जैसे “केवल एक पत्नी का पति”, “अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य”, “केवल एक बार विवाहित”, “अपने जीवनसाथी के प्रति विश्वासयोग्य” या “विवाह में विश्वासयोग्य”।

1 तीमुथियुस 3 की सूची आगे उम्मीदवार के घराने की बात करती है, और दोनों सूचियाँ उम्मीदवार के बच्चों की बात करती हैं।

इस पर एक महत्वपूर्ण चर्चा है कि क्या पौलुस 1 तीमुथियुस 3:2 और तीतुस 1:6 में पुरुषवाचक भाषा का प्रयोग सामान्य अर्थ में करता है, ताकि उन गुणों का वर्णन करे जो पुरुषों और स्त्रियों दोनों पर लागू होते हैं।

हम उस शब्द के अनुवाद की संभावनाओं पर भी चर्चा कर सकते हैं जो इन सूचियों को आरंभ करता है – *dei* –, जिसका अर्थ “यह आवश्यक है” भी हो सकता है और “यह उचित है” भी।

और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में भी एक महत्वपूर्ण चर्चा है:

- यदि पुराने नियम में ही पुरुष की अगुवाई की भूमिका के अपवाद थे, और यदि व्यापक समाज में भी पहले से अपवाद थे, और यदि स्त्रियों के प्रति यीशु और प्रेरितों का रवैया प्रचलित संस्कृति के रवैये से अधिक

सकारात्मक था, और यदि स्त्रियों ने आत्मा के वरदान पाए और उनका प्रयोग किया, और यदि कलीसियाओं में प्रिस्किल्ला, यूनिया और लुदिया जैसी, और नुमफा, फीबे आदि जैसी प्रमुख स्त्रियाँ थीं, तो – यदि ऐसा कोई नियम होता कि कलीसियाओं में प्राचीन का पद सभी स्त्रियों के लिए वर्जित है – उसे बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाना चाहिए था, ताकि उसके बारे में कोई संदेह न रह सके।

पर अब हमारी केंद्रीय बात आती है। निर्णायक प्रश्न यह है: क्या पौलुस उपयुक्त उम्मीदवारों के लिए संकेत देता है, जिन पर तीमुथियुस और तीतुस विचार करें, या वह ऐसी अनिवार्य शर्तें निर्धारित करता है जो हर स्थिति में अनिवार्य हैं, ताकि किसी व्यक्ति को परमेश्वर की कलीसिया में प्राचीन होने के योग्य माना जा सके? हमारी केंद्रीय बात यह है कि इन सूचियों को अनिवार्य शर्तों की सूचियों के रूप में पढ़ने का कोई अर्थ नहीं बनता।

याद कीजिए कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 7 में प्रभु की सेवा के कार्य के लिए अविवाहित रहने के लाभों के बारे में लिखा था। इन्हें बाध्यकारी शर्तों के रूप में समझने का परिणाम यह होता कि स्वयं पौलुस को किसी स्थानीय कलीसिया में प्राचीन के पद के लिए अयोग्य माना जाता, क्योंकि उसकी न पत्नी थी, न वह कोई घराना चलाता था, न उसके बच्चे थे। और यही बात स्वयं प्रभु यीशु पर भी लागू होती, जिसकी न पत्नी थी, न घराना, न बच्चे। यह एक बेतुका निष्कर्ष होता।

ये सूचियाँ सामान्य, अनिवार्य माँगें नहीं हैं; ये संभावित उम्मीदवारों के लिए संकेतक हैं, जो परिस्थितियों के अनुसार उपयुक्त हैं।

यदि इन सूचियों का उपयोग उन लोगों को निश्चित रूप से बाहर करने के लिए नहीं किया जा सकता जिनका कोई जीवनसाथी, कोई बच्चे या कोई घराना नहीं है, तो उनका उपयोग स्त्रियों को निश्चित रूप से बाहर करने के लिए भी नहीं किया जा सकता।

इन सूचियों की हमारी व्याख्या – कि वे संबंधित परिस्थितियों के अनुरूप संकेतक हैं – दोनों सूचियों के बीच के अंतरों से पुष्ट होती है। उदाहरण के लिए, क्योंकि इफिसुस की कलीसिया भली-भाँति स्थापित है, इसलिए पौलुस 1 तीमुथियुस 3:6 में कह सकता है कि उम्मीदवार कोई नया चेला न हो। परंतु क्रेते की कलीसियाएँ, जिनमें तीतुस को प्राचीन नियुक्त करने हैं, नई हैं; इसलिए तीतुस के नाम पौलुस की पत्नी में ऐसी कोई माँग नहीं है, क्योंकि वह हर नियुक्ति को रोक देती।

दो सबसे महत्वपूर्ण बातें

आइए अब, जो कुछ हमने अब तक देखा है, उसमें से दो सबसे महत्वपूर्ण बातों को चुनें।

दो सबसे महत्वपूर्ण बातों का हमारा चुनाव उसी से निकलता है जिसे पूरकतावादी स्वयं अपनी स्थिति के लिए केंद्रीय मानते हैं।

निस्संदेह 1 तीमुथियुस 2:12 स्त्रियों की सेवकाई पर पूरकतावादी प्रतिबंधों के लिए सबसे महत्वपूर्ण पाठ है। इसके केंद्रीय महत्व पर विद्वान और लोकप्रिय शिक्षक दोनों अक्सर ज़ोर देते हैं। उदाहरण के लिए जॉर्ज नाइट (George Knight) *Recovering Biblical Manhood and Womanhood* में कहते हैं कि पद 12 “सबसे स्पष्ट कथन” है, जो “इस बात पर ज़ोर देता है कि कलीसिया में पुरुष ही प्राथमिक अगुवे हैं” (1991 का संस्करण, पृ. 359)। माइक विंगर (Mike Winger) अपनी वीडियो-श्रृंखला “Women in Ministry” में कहते हैं कि 1 तीमुथियुस 2 वह “सबसे

स्पष्ट" स्थान है जो कलीसिया में स्त्रियों की अगुवाई को सीमित करता है (भाग 12, ALL The Debates over 1 Tim 2:11-15, 0:01 पर और 9:00 से 9:01 पर)।

इसलिए मुझे यह काफ़ी आश्चर्यजनक लगता है कि पद 12 पर हमारी केंद्रीय आपत्ति का पूरकतावादी लेखकों और वक्ताओं के पास कोई उत्तर नहीं है: यह समस्या कि "मैं अनुमति नहीं देता" आचरण का ऐसा सामान्य नियम लागू करने का सही तरीका नहीं है, जो कथित रूप से परमेश्वर की प्रकट इच्छा को दर्शाता हो – एक ऐसा सामान्य नियम, जिसकी अवहेलना पापपूर्ण होती।

यदि यह परमेश्वर का एक सामान्य नियम है, तो वह परमेश्वर है जो किसी स्त्री को शिक्षा देने या पुरुष पर अधिकार चलाने की अनुमति नहीं देता – पौलुस नहीं!

पूरकतावादी इस पर ज़ोर देते हैं कि यहाँ ठीक ऐसा ही नियम है – परमेश्वर द्वारा निर्धारित एक सामान्य नियम। पर तब पौलुस का यह कहना कि "मैं इसकी अनुमति नहीं देता" कोई अर्थ नहीं रखता। यदि यह परमेश्वर की व्यवस्था है, तो यह पौलुस का कोई नीतिगत निर्णय कैसे हो सकता है?

पूरकतावादी 1 तीमोथियुस 2:12 के इस कथित नियम को, जो स्त्रियों की शिक्षा और अधिकार को सीमित करता है, स्त्री पर पुरुष के अधिकार के एक और अधिक मूलभूत नियम का विस्तार मानते हैं। क्योंकि आदम पहले रचा गया, इसलिए किसी तरह यह निकलता है कि पुरुष इस बात के लिए उत्तरदायी हैं कि वे अपनी पत्नियों पर और स्त्रियों पर अधिकार चलाएँ। हमारी दो सबसे महत्वपूर्ण बातों में से दूसरी बात सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह इस अधिक मूलभूत नियम की जड़ तक जाती है।

हमारी सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पवित्र शास्त्र में पुरुषों को संबोधित ऐसी कोई भी ईश्वरीय शिक्षा पूरी तरह अनुपस्थित है जो कहती हो कि स्त्रियों पर प्रभुता करना पुरुषों का काम है।

जॉन पाइपर (John Piper), वेन ग्रूडेम (Wayne Grudem) के साथ, पूरकतावाद के मुख्य निर्माताओं में से एक हैं। वे मानते हैं कि डैनवर्स वक्तव्य (Danvers Statement) "भविष्यसूचक" है और वह "उन पुरुषों का सामना करता है जो अपनी पत्नियों की अगुवाई करने को तैयार नहीं हैं" (Piper, "The Current State of Complementarity", Desiring God की वेबसाइट, 2022)। पाइपर के अनुसार यदि कोई पति अपनी पत्नी को आत्मिक अगुवाई देने से चूकता है, तो यह "एक विनाशकारी पाप" है (Recovering Biblical Manhood and Womanhood, 1991 का संस्करण, पृ. 44)।

पर यदि अपनी पत्नी या स्त्रियों की अगुवाई करने के पुरुष के कथित कर्तव्य की उपेक्षा एक विनाशकारी पाप है, तो उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक कोई भी भविष्यद्वक्ता और कोई भी शिक्षक पुरुषों को स्पष्ट रूप से यह क्यों नहीं बताता कि उनका ऐसा कोई कर्तव्य है?

पौलुस ने यह नहीं कहा। पतरस ने यह नहीं कहा। यीशु ने यह नहीं कहा। परमेश्वर ने यह नहीं कहा।

एक चेतावनी-संकेत – एक लाल झंडा

अंत में मैं एक और बात का उल्लेख करना चाहता हूँ, जिसे मैं अपनी पुस्तक "True Complementarity: The way of Christ for men and women" ("सच्ची पूरकता: पुरुषों और स्त्रियों के लिए मसीह का मार्ग") में उभारता हूँ।

याद कीजिए कि बाइबल में वास्तव में एक स्थान है जहाँ कोई यह आदेश देता है कि पुरुष स्त्रियों पर प्रभुता करें। यह स्थान एस्तेर की पुस्तक में है, और यह आदेश न तो सच्चे परमेश्वर ने दिया था, न उसके नाम में दिया गया था।

यह मूर्तिपूजक “पंडितों” से आया था। यह आदेश एक क्रोधित और प्रतिशोधी मूर्तिपूजक राजा ने दिया था। उसकी रानी ने साहस के साथ नशे में दिए गए उसके इस आदेश को मानने से इनकार कर दिया था कि वह उसके राजकीय भोज में किसी वस्तु की तरह प्रदर्शित की जाए और उसके मतवाले अतिथि उसे घूरें।

एस्तेर 1:22 में राजा क्षयर्ष (Xerxes) का आदेश यह है कि हर पुरुष अपने घर में स्वामी रहे, जिसका विशेष अर्थ यह है कि हर पुरुष अपनी पत्नी पर प्रभुता करे (देखिए पद 16–20)।

जब राजा का क्रोध शांत हुआ, तो वह यौन शोषण के एक संस्थागत रूप में लग गया। उसके राज्य के हर प्रांत से शारीरिक रूप से आकर्षक कुँवारियाँ उसके लिए लाई गईं। फिर वह हर रात एक युवा स्त्री, एक कुँवारी, का बलात्कार करता था, जिसे वह उसके बाद अपने रनिवास के “इस्तेमाल हो चुके माल” वाले भाग में भेज देता था – जहाँ से उसे फिर कभी देखा न जाता, जब तक कि उसे बुलाया न जाए (एस्तेर 2)।

ऐसा था वह व्यक्ति जिसने यह आदेश दिया। एक मूर्तिपूजक, बार-बार बलात्कार करने वाला, एक घृणित यौन अपराधी – वही बाइबल का एकमात्र व्यक्ति है जो पुरुषों को स्त्रियों पर अधिकार चलाने की आज्ञा देता है।

इससे स्पष्ट चेतावनी-संकेत की कल्पना करना कठिन है।

पुरुष-सत्ता का उसका नीच दुरुपयोग उत्पत्ति 3:16 में परमेश्वर की चेतावनी की एक अंधकारमय पुष्टि है। स्त्रियों पर पुरुषों की प्रभुता मनुष्य की अवज्ञा का परिणाम है। यह पुरुषों को दी गई परमेश्वर की आज्ञा नहीं है।

आगे के अध्ययन के लिए

For more on the traditional majority view of women’s inferiority, and its rejection, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapter 2.

For more on the complementarian concept of “roles”, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapter 7.

For more on Genesis 2 and 3, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapters 5 and 6.

For more on women in the Old Testament, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapters 7 and 8.

For more on Jesus, the Twelve, and the Gospels, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapters 3 and 4.

For more on 1 Corinthians 7, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapter 9.

For more on Ephesians 5, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapters 10 and 11.

For more on 1 Peter, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapter 12.

For more on the New Testament ministries of women, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapters 13 to 17.

For more on 1 Corinthians 11:2–16, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapters 18 to 20.

For more on 1 Corinthians 14:34–35, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapters 21 and 22.

For more on 1 Timothy 2, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapters 23 to 29.

For more on elders' qualifications in 1 Timothy 3 and in Titus 1, see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapter 30.

If you are concerned about the impact of culture on interpreting the Bible, and about "slippery slopes" (where one change of view leads to another), see True Complementarity: The way of Christ for men and women (Apollos, 2026), chapter 31.

संपर्क

कृपया अपने प्रश्न या टिप्पणियाँ संपर्क-फ़ॉर्म के द्वारा हमें भेजिए।

टिप्पणियाँ

1. स्पष्टीकरण के अभाव के लिए देखिए Hurley, Man and Woman in Biblical Perspective, 1981: 200–2; Recovering Biblical Manhood and Womanhood, 1991: 180–1 (Moo); Knight, The Pastoral Epistles 1992: 140; Mounce, Pastoral Epistles 2000: 120–3; Grudem, Evangelical Feminism and Biblical Truth 2004: 65–9, 299–302; Blomberg, Two Views on Women in Ministry 2005: 168; Sandom, "Different by Design" 2012: 154–60; Köstenberger और Köstenberger, "God's Design for Man and Woman" 2014: 205–12; "Women in The Church", तीसरा संस्करण: 155–61 (Köstenberger), 188–90 (Schreiner); Smith, God's Good Design 2019: अध्याय 2; Grudem, Systematic Theology, दूसरा संस्करण 2020: 1152, 1161; DeYoung, Men and Women in the Church 2021: 79–80; Kuruvilla, 1 and 2 Timothy, Titus 2021: खंड 4.2.1–2। यारब्रो (Yarbrough) (The Letters to Timothy and Titus 2018: 175) इस कठिनाई पर सीधे बात तो नहीं करते, पर कहते हैं कि पौलुस का मुख्य विचार "तीमुथियुस को उस कार्य-विभाजन की याद दिलाने का एक शिष्ट तरीका है जो कलीसिया की आराधना में लागू था"। परंतु यह विश्वसनीय नहीं है। यदि स्त्रियों द्वारा शिक्षा देने को रोकना पौलुस की सामान्य प्रथा होती, तो तीमुथियुस को इसकी याद दिलाना शिष्टता न होती। तुलना के लिए: यौन अनैतिकता की निंदा करना उसकी सामान्य प्रथा थी, पर कोई गंभीरता से यह कल्पना नहीं कर सकता कि वह शिष्टता के कारण तीमुथियुस को लिखे: "मैं यौन अनैतिकता की अनुमति नहीं देता।" इसके अतिरिक्त इस पत्र में पौलुस की शिष्टता इस बात में दिखाई देती है कि वह गलत आचरण करने वाली धनी स्त्रियों का नाम नहीं लेता, जबकि तीमुथियुस के प्रति वह पूरी पत्र में काफ़ी सीधी बात करता है (देखिए 1:3; 18–19; 3:15; 4:6–7; 11–16; 5:1; 21–23; 6:2; 11–14; 20–21)।

टिप्पणी 309 में यारब्रो दो स्थान बताते हैं जहाँ "अनुमति देना" शब्द प्रयुक्त हुआ है, और ये कठिनाई को और उभारते हैं: (1) 1 कुरिन्थियों 14:34 में "अनुमति नहीं है" अन्य पुरुष में कर्मवाच्य है, जो किसी सक्षम अधिकारी द्वारा निर्धारित सामान्य नियम को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त है, "मैं अनुमति नहीं देता" के विपरीत; (2) 1 कुरिन्थियों 16:7 में पौलुस कहता है कि वह किसी समय कुरिन्थियों से मिलने की आशा रखता है, "यदि प्रभु चाहे" – जिसकी अनुमति प्रभु किसी एक समय दे सकता है, पर किसी दूसरे समय नहीं। मैंने "मैं अनुमति नहीं देता" वाली इस समस्या को Bartlett, Men and Women in Christ: Fresh Light from the Biblical Texts 2019: 220, में उठाया है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, मेरी पुस्तक पर विचार करने वाले किसी भी पूरकतावादी समीक्षक ने इसका

कोई उत्तर नहीं दिया। कोई यह संकेत कर सकता है कि मरकुस 10:4 में फरीसी कैसे बोलते हैं (“मूसा ने त्यागपत्र लिखने की अनुमति दी है”) और मत्ती 19:8 में यीशु (“मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी पत्नियों को छोड़ देने की अनुमति दी”)। यह संकेत व्यवस्थाविवरण 24:1-4 में मूसा की व्यवस्था के उस नियम के प्रभाव की ओर है, जो अपनी पत्नी को तलाक देने वाले पुरुष को बाद में उससे फिर विवाह करने से रोकता था; इसमें यह निहित था कि तलाक सहा जाता था, और यीशु समझाता है कि ऐसा क्यों था। परंतु यहाँ “मूसा” एक संक्षिप्त अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ है “मूसा की व्यवस्था”, और ये पाठ उत्तम पुरुष (“मैं अनुमति देता हूँ”) का प्रयोग नहीं करते। वास्तव में मूसा की व्यवस्था में कहीं भी “मैं अनुमति देता हूँ” या “मैं अनुमति नहीं देता” नहीं कहा गया, और स्वयं यीशु भी आचरण का कोई नियम प्रस्तुत करते समय कभी ऐसी अभिव्यक्ति का प्रयोग नहीं करता।